जरा सोचिये

सदियों से, प्रत्येक धर्म तथा उसके ग्रन्थ आदि सार रूप में एक ही संदेश इन्सान को देते आये हैं 'हे इन्सान, तू इन्सान बन।' आखिर ऐसी क्या बात है कि इन्सान को ही मानव बनने पर जोर दिया जाता रहा है? यह 'मनुर्भव' की भावना पर क्यों जोर दिया जाता रहा है?

स्पष्ट है, इसका कारण मानव की वे विपरीत गतिविधियां, कार्य, क्रिया-कलाप रहे हैं जो कि एक मानव को नहीं करने चाहिये। यह उसे मानव से दानव की श्रेणी में ला देते हैं। आज प्राय: इन्सान मोह-माया, लोभ, स्वार्थ के निज हित हेतु यथा संभव, यथा शक्ति दूसरे इन्सान को कष्ट दे रहा है। क्षुद्र आकांक्षाओं एवं अधिकतम भोग विलास की कामना पूर्ति हेतु वह निरंतर भ्रेष्ट पथ पर अग्रगामी है।

कभी सोचा है उसने कि मैं जो धर्म के नाम पर उन्मादी, धर्मान्ध, कर्मकाण्डी हो रहा हूँ वह कृत्य मुझे स्वयं धर्म से दूर कर रहा है। जातिवाद के अर्थ बदल दिये गये हैं। मगर वह अभी तक कायम है। शायद पूर्व से कहीं अधिक सुदृढ़ता तथा सूक्ष्मता एवं गहराई से जड़ें जमा रही है भविष्य में अधिक विनाश करने हेतु। भाषावाद में उलझ कर हम एक सृजनात्मक, परस्पर सामंजस्य, सुमधुरता स्थापित करने वाली सर्व प्रिय, सर्वकालीन 'प्रेम की भाषा' से दूर हो गये हैं। क्षेत्रवाद में पड़कर हम कूप मंडूक बने दिलों में दूरियां बढ़ा रहे हैं। निश्चय ही ये कुत्सित् विचारधारायें हमारी निरंतर प्रगति व विकास का आशानुकूल परिणाम न होकर हमारे मस्तिष्क की असंतुलित अवस्था तथा हमारे समाज एवं राष्ट्र हेतु विनाशक उत्तरदायी कारक एवं कारण बन रही हैं। ये संकीर्णतायें हमारे लिये घृणित कलंक का कार्य कर रही हैं।

हम एक-दूसरे का रक्त बहा रहे हैं, क्यों...? किसलिये...? यदि हम इन प्रश्नों पर गौर करें कि हम कहाँ से आये हैं? कहाँ हमें जाना है? क्यों आयें हैं? अर्थात क्या उद्देश्य है हमारा इस पृथ्वी पर? यह उद्देश्य हमने पूर्ण कर लिया है अथवा नहीं आदि-आदि तो शायद इन्सान बनने की तरफ हमारा कदम उठे, चल पड़े। मतभेद समाप्त हो जायें।

वास्तविकता यह है कि हमें इस सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, निराकार, अजर-अमर ईश्वर ने भेजा है ताकि हम इसकी बनायी सृष्टि एवं इसके बनाये अद्भुत इन्सानों से सच्चा,निस्वार्थ प्रेम कर सकें।

पहले हम अपने मूल को पहचानें, जानें। जब यह ज्ञात हो जाये कि हम जिन्हें दूसरा या पराया मानते थे वे तो अपने ही हैं तब समदृष्टि-सम्भाव जागता है; क्योंकि हमें अपने गंतव्य स्थल मूल स्थान की पहचान हो जाती है।

सृजन का एक मूल मन्त्र "**कर्म ही पूजा है**" प्रसिद्ध है, मगर कर्म हमारे सुकर्म हों तथा सर्व जन हिताय की भावना से ओत-प्रोत हों। कर्म के साथ जब ईश्वर का शाश्वत ज्ञान मिल जाता है तो ये दो पंख ऐसे बन जाते हैं कि मानव रूपी पक्षी संतुलित अवस्था में आसानी से उड़कर अपनी यात्रा सक्षमता, सुगमता से पूर्ण कर लेता है। अर्थात् हमारे पृथ्वी पर आने का, शांति स्थापित करने का, सृजन करने का उद्देश्य पूर्ण हो जाता है।

आज के भौतिकवादी युग में भौतिक वस्तुओं से इन्सान जो सुख प्राप्त कर रहा है --वे अच्छे हैं, मगर इनसे मोह तथा सुख प्राप्ति की भावना उस सीमा तक ही रखें कि वे हमारी वास्तविक शारीरिक, मानसिक, आत्मिक एवं धार्मिक विकास धाराओं में रूकावट न बनें अन्यथा उनके लोभवश संग्रह करने की प्रवृत्ति के वशीभूत होकर दुष्कार्य करना हमारा इन्सानियत से नाता तोड़ कर दूर होने वाला आत्मघाती कदम कहलायेगा।

मनोज कुमार 'सागर', तकनीशियन

हम स्वयं दूसरों को उदाहरण देते अपने वैराग्य भाव को प्रकट करते कहते हैं कि सब कुछ यहीं रह जाना है; बड़े-बड़े शक्तिशाली, धनी, कुछ नहीं ले जा पाये। मगर कितनी हास्यास्पद बात है कि व्यवहारिकता में हम स्वयं भी वही कर रहे होते हैं, जबकि जानते हैं कि अंततः पंच तत्व का पुतला इन्हीं में विलीन हो जाना है। फिर क्यों न हम अपनी इस जिंदगानी के सफर को हँसते-मुस्कराते एक अमिट छाप छोड़ते हुए पूर्ण करें।

यह तभी संभव है जब हम अपनी संकीर्णताओं को त्याग कर विशालता, समदृष्टि-समभाव से अपनायेंगे। इसके लिये 'त्याग' की आवश्यकता होगी और 'त्याग' मन-वचन-कर्म से एक होकर, दृढ़ संकल्प से तन-मन-धन से ही संभव है।

मगर खेद है कि आज धन-पद, ख्याति आदि आकांक्षायें हमारे आड़े आ जाती हैं। इन्सान इन्हीं तरह-तरह की 'मैं' में पड़ा हुआ है। मैं अधिक शिक्षित हूँ। मैं धनी हूँ। मैं वरिष्ठ हूँ इत्यादि। ये अहंकारी भावनायें हमें छू कर हमें छुद्र बना देती हैं। यहीं से हमारा नैतिक पतन तथा असंतुष्टता एवं दुखी होने का भाव प्रारम्भ हो जाता है।

आइये हम इन संकीर्णताओं से उभर कर, विशालता अपनाते हुए, सृजनता की तरफ खुले हृदय से चलें। इन्सान बनें। इन्सान को समझें। इन्सान की भाँति व्यवहार करें। इसी में हमारा, हमारे राष्ट्र तथा समाज एवं विश्व का हित है। यही हमें शोभा देता है।

ज्ञान वार्ता

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE- 247667 (U.P.)

प्रश्न	1	मनुष्य कौन है?
उत्तर	1	जिसे अच्छे बुरे काम की पहचान हो।
प्रश्न	2	जिज्ञासु कौन है?
उत्तर	2	जिसको अविद्या रूपी नींद से जागने की इच्छा हो।
प्रश्न	3	सोया हुआ कौन है?
उत्तर	3	जिसको अपने आप की पहचान नहीं है।
प्रश्न	4	दुखी कौन है?
उत्तर	4	जिसको दिन रात धन पदार्थों की चिन्ता लगी रहती है।
प्रश्न	5	सुखी कौन है?
उत्तर	5	जिसको हृदय में सदैव आत्मानुभव हो रहा हो।
प्रश्न	6	वीर कौन है?
उत्तर	6	जिसने मन व इन्द्रियों को जीत लिया हो।
प्रश्न	7	कायर कौन है?
उत्तर	7	जो विषय भोगों के वियोग को सहन नहीं कर सकता।
प्रश्न	8	दीन कौन है?
उत्तर	8	जो तृष्णा के अधीन है।
प्रश्न	9	धनी कौन है?
उत्तर	9	जो शुभ कर्मों का संचय करता है।
प्रश्न	10	दाता कौन है?
उत्तर	10	जो ज्ञान का दान देता है।